Result Mitra Daily Magazine

कृषि पर बढ़ती निर्भरता

❖ हालिया संदर्भ :

- हाल ही में NABARD यानि राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक द्वारा 'भारतीय ग्रामीण वित्तीय समावेशन सर्वेक्षण' के रिपोर्ट जारी किए गए, जिसके अनुसार देश के 57% ग्रामीण परिवार जिनमें 50,000 से कम आबादी वाले अर्द्ध–शहरी क्षेत्र भी शामिल है, 'कृषि' से जुड़े हुए हैं।
- 2021-22 के इस सर्वे में बताया गया कि यह संख्या 2016-17 के पिछले सर्वे में बताए गए 48% से ज्यादा है।

❖ कृषि परिवार का वर्गीकरण :

- NABARD द्वारा कृषि परिवार को दो रूप में परिभाषित किया गया है :

I. खेती (खेत, बागवानी फसल, पशुधन, मुर्गीपालन, जलीय कृषि, रेशम उत्पादन या मधुमक्खी पालन) से होने वाली उपज का कुल मूल्य 6500 रूपये से ज्यादा हो,

II. जिस परिवार का कोई एक सदस्य (जुलाई 2021–जून 2022) के दौरान उपरोक्त क्षेत्रों में स्व–नियोजित हो।

Note: 2016-17 में उपज का कुल मूल्य 5000 रूपये निर्धारित किया गया था।

- 2021-22 में कृषि परिवारों की अखिल भारतीय औसत मासिक आय 13,661 रुपए रही, जो गैर कृषि परिवारों (ग्रामीण) की औसत आय 11, 438 रुपए से ज्यादा थी।
- 2016-17 में कृषि परिवारों की औसत आय (8931 रु.) गैर कृषि ग्रामीण परिवारों की औसत मासिक आय (7269 रु.) से ज्यादा रही थी।

❖ कृषि में प्रतिशत हिस्सा :

- ग्रामीण कृषि परिवारों में कुल आय में खेती और पशुपालन का योगदान 2021-22 में 45% रहा, जबकि 2016-17 में यह 43.1 % था।
- कृषि से आय विभिन्न भूमि वर्ग वाले कृषि परिवारों के लिए निम्नवत रहा –
  1. 0.01 हेक्टेयर से कम – 23.5–26.8 %
  2. 0.41–01 हेक्टेयर – 38.2–42.2%
  3. 1.01– 2 हेक्टेयर – 52.5–63.9%
  4. हेक्टेयर से ज्यादा – 58.2–71.4%

- निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि 2016-17 से 2021-22 के दौरान ग्रामीण भारत या भारत में कृषि में कमी के बजाय वृद्धि दर्ज की गई है, साथ ही न केवल कृषि परिवारों की हिस्सेदारी बढ़ी है, बल्कि कृषि से आय में भी वृद्धि हो रही है।

Result Mitra TM

❖ कोविड का प्रभाव :

- यह सर्वे कोविड–प्रेरित लॉकडाउन के बाद हुआ था और इसमें लॉकडाउन के दौरान लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों का प्रभाव देखा जा सकता है।
- लॉकडाउन के दौरान भी कृषि संबंधित गतिविधियों में छूट दी गई थी और भारत में 2019 से मानसून लगातार अच्छा रहा है, जिसे निष्कर्ष के रूप में सर्वे में देखा जा सकता है।
- इसके अलावा NSSO (राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय) का आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) भी कृषि की ओर पलायन को रेखांकित करता है।

❖ NSSO की रिपोर्ट :

- PLFS 1993–94 के अनुसार, देश का 64.6 % कार्य बल कृषि में लगा था, जो 2004–05 में घटकर 58.5%, 2011–12 में 48.9% एवं 2018-19 में सर्वकालिक निम्नतम स्तर 42.5% पर आ गया।
- इसके बाद प्रवृत्ति में उलटफेर हुआ और 2019-20 और 2020-21 के दौरान यह हिस्सेदारी बढ़कर 45.6% और 46.5% हो गई।
- 2018-19 में कृषि ने ग्रामीण कार्यबल को 57.8%, 2019-20 में 61.5%, 2020-21 में 60.8%, 2021-22 में 59%, 2022-23 में 58.4% एवं 2023-24 में 59.8% का रोजगार दिया।

❖ कृषि पर बढ़ती निर्भरता :

- एक तरफ जहां 2016-17 से 2023–24 के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था 1.4 गुना विस्तारित हुई है, वहीं कृषि में रोजगार एवं आजीविका दोनों बढी है।

Result Mitra TM

- इसका संबंध आंशिक रूप से विनिर्माण क्षेत्र में नौकरियों में हो रही कमी से भी है, जिसने 2023–24 में सिर्फ 11.2% कार्यबल को रोजगार दिया, जो 2011-12 में 12.6% और 2018-19 में 12.1% से कम है।
- 2023–24 में विनिर्माण में लगे कार्यबल का हिस्सा व्यापार, होटल एवं रेस्तरां (12.2 %) एवं निर्माण (12%) से भी कम था।
- इसका तात्पर्य यह है कि यदि कृषि में अधिशेष श्रम शामिल हो भी रहा है तो खेतों से कारखानो की तरफ नहीं जा रहा है, बल्कि यह कम सीमांत उत्पादकता एवं अनौपचारिक क्षेत्रों की ओर जा रहा है।

❖ सर्वाधिक - न्यूनतम हिस्सेदारी :

- PLFS आंकड़ों के अनुसार, विभिन्न राज्यों में वृद्धि में कार्यरत श्रम बल की हिस्सेदारी निम्नवत है :–

- छत्तीसगढ़ – 63.8 % (सर्वाधिक)
- मध्यप्रदेश – 61.6%
- उत्तरप्रदेश – 55.9%
- बिहार – 54.2%
- हिमाचल प्रदेश– 54%
- पश्चिम बंगाल – 38.2%
- तमिलनाडु – 28%
- हरियाणा – 27.5%
- पंजाब – 27.2%
- केरल – 27%
- गोवा – 8.1 (न्यूनतम)

TM Result Mitra

❖ चिंतनीय :

- एक ऐसी अर्थव्यवस्था, जिसका आकार 2011-12 में 1.82 ट्रिलियन USD था, जो 2016 में बढ़कर 2.29 ट्रिलियन USD एवं 2023 में 3.55 ट्रिलियन USD हो गया, में रोजगार के लिए कृषि पर ज्यादा निर्भरता अर्थशास्त्रियों के बीच बहस का विषय बना हुआ है।

  Note:– वर्तमान में भारत IMF के अनुसार 3.94 ट्रिलियन USD वाली अर्थव्यवस्था है, जो GDP के मामले में USA (28.78 ट्रिलियन USD), चीन (18.53 ट्रिलियन USD), जर्मनी (4.59 ट्रिलियन USD) एवं जापान (4.1 1 ट्रिलियन USD) के बाद पांचवें स्थान पर है।

- भारत PPP (Purchasing Power Parity) मामले में चीन एवं USA के बाद तीसरे स्थान पर है।

Result Mitra